नाहन में है अति प्राचीन जैन प्रतिमाएं

नाहन जिला सिरमौर का मुख्यालय है। यह राज्य विशुद्ध पर्यावरण, साफ-सफाई, घने जंगलों, नैसर्गिक सुन्दरता, सुशासन एवं जनहित के अनेक अनुकरणीय कार्यों के लिए विख्यात् था। ईस्वी सन् 1850 तक नाहन में कोई जैन धर्मावलम्बी नहीं था। नाहन के राजा के निमन्त्रण पर राजस्थान के फतेहपुर शेखाबटी (जिला सीकर) से लाला सरदारीमल जैन यहाँ घूमने के लिए पधारे तथा नाहन में ही व्यापार शुरू कर दिया। मूलत: लाला सरदारीमल जैन के बुजुर्ग सेठ चौधरी तोहनमल हिसार से नवाब फतेह खां के मुसाहिब बनके ईस्वी सन् 1448 में हिसार से फतेहपुर आकर निवास करने लगे थे। लाला सरदारीमल जी के परिवार को आज नाहन में दस पीढ़ियाँ हो चुकी हैं। हिमाचल प्रदेश में दो दिगम्बर जैन मंदिर नाहन एवं शिमला में है। तीर्थंकर आदिनाथ जी की एक भव्य प्रतिमा कांगड़ा के प्राचीन किले में विराजमान है। सोलन जिला के नालागढ़ में भी एक जैन स्थानक है।

अक्टूबर 1925 तक नाहन में कोई जैन मंदिर या चैत्यालय न था। श्री पारसनाथ जी भगवान की छोटी प्रतिमा यहाँ के स्वर्गीय लाला हीरालाल जैन के एक सनातन धर्म मंदिर में थी। यह मंदिर मियां का मंदिर या भगवान परशुराम जी के मंदिर से मिली यह प्रतिमा वीर निर्वाण सम्वत् 1502 व ईस्वी सन् 976 पद्मासन सप्त धातिमनोग्य है। यहाँ के जैनियों की प्रार्थना पर यहाँ के राजा व सनातन धर्मी भाइयों ने इसको जैनियों के हवाले कर दिया। यह इस प्रतिमा का ही अतिशय था कि सन् 1927 में दो मंजिला मकान जैन मौहल्ले में मंदिर निर्माण के लिए खरीद लिया गया था। सन् 1938 में इस मंदिर में दो प्रतिमाएं दिगम्बर जैन मंदिर सहारनपुर से लाई गई थीं। संगमरमर के पत्थर से बनी पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा ईस्वी सम्वत् 1022 की है (सढौरा से लाई गई) तथा इसकी प्रतिष्ठा जिनचन्द्र आचार्य देवसंघ व जीवराज पापाराबल के द्वारा हुई थी। जिनचन्द्र आचार्य पाण्डवपुराण के रचयिता शुभचन्द्र के शिष्य थे।

दीवार पर अंकित भित्तिचित्र राजा सोमश्रयांस द्वारा आदि तीर्थंकर श्री ऋषभदेव जी महाराज को आहार देते हुए दर्शाया गया है। इस दिगम्बर जैन मंदिर में यात्रियों के ठहरने के लिए एक छोटी-सी धर्मशाला भी बनाई गई। इस मंदिर में विराजमान 1008 श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ की प्रतिमा के दर्शन जो भी मन से करता है उसको मनवांछित फल की प्राप्ति होती है, ऐसा विश्वास किया जाता है।

-विजय कुमार जैन, नाहन